इन भांत आजिज होए के, आया पास श्री राज ।
जवाब कोई न देवहीं, बहुत फिरा इन काज ॥६४॥

इस प्रकार सबके घर चक्कर काटने के पश्चात लाचार होकर कान्ह जी भाई श्री जी के पास आए और कहा कि हे धनी ! मैंने उत्तर लेने के लिए हर तरह से प्रयास किया है किन्तु कोई भी उत्तर देने का साहस नहीं करता ।

महामत कहें सुनो मोमिनों, ए नलुओं की बीतक ।
अब कहों आगे परियान की, कहों सो हकीकत ॥६५॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! यह नलुओं (पत्रों) को पहुंचाने की हकीकत आपको सुनाई है । अब फिर सब सुन्दरसाथ ने जो आपस में विचार विमर्श किया, उसे कहता हूं ।

(प्रकरण ४०, चौपाई २०३१)

रामचन्द्र वकील के, फिरे कोईक दिन ।
चरचा सुनाई बहुतक, ना देखा अंकूर मोमिन ॥१॥

दिल्ली में एक रामचन्द्र वकील रहते थे । उसके घर कई दिन तक गए । उसे जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से परमधाम और अक्षरातीत की चर्चा सुनाई परन्तु उसमें ब्रह्मसृष्टि का कोई भी अंकूर नजर नही आया ।

उधोव दास गोड़िया, बड़ा भाई गंगा राम ।
दोए दिन सेवा करी, उत पाया विसराम ॥२॥

उद्धव दास गोड़िया, जो गंगा राम का बड़ा भाई था, चर्चा सुन कर उसने दो दिन तक सेवा की । उसको संसार के सुखों में ही शान्ति मालूम होती थी ।

सुन्दरी एक सन्यासिन, मिली रेती में आए ।
दीदार कर पीछे फिरी, और नजरों न आया ताए ॥३॥

सुन्दरी नाम की एक सन्यासिनी थी । वह स्वामी जी से यमुना जी के किनारे मिली । वह उनके दर्शन करके लौट गई । उसे श्री जी के स्वरूप की पहचान न हो सकी ।

मास दोए नलुओं मिने, किया गुजरान इत ।
पहुंचावनें पैगाम को, दावत जो कयामत ॥४॥

नलुओं के द्वारा कयामत के जाहिर होने तथा ईमाम मेंहदी के अग्यारहवीं सदी में आने का सन्देश और कुरान की हकीकत औरंगजेब तक पहुंचा कर उसकी आत्मा को जगाने के प्रयास में यहीं पर दो महीने व्यतीत हो गए ।

Nijanand App

फेर बैठे परियान को, जाए दूर बैठे श्री राज ।
आपस में मसलत करी, क्या करना है आज ॥५॥

जब कोई भी सफलता प्राप्त नही हुई तो श्री जी ने सब सुन्दरसाथ को लेकर दिल्ली से बाहर एकान्त में एक जगह बैठ कर सबसे विचार विमर्श किया कि अब औरंगजेब को पैगाम देने के लिए कौनसा कदम उठाना चाहिए ।

साथ केताइक दिल्लीय का, और केताइक महाजर ।
मसलत करी बाग में, क्यों ए पावें खबर ॥६॥

इसमें कुछ सुन्दरसाथ दिल्ली के थे और कुछ सुन्दरसाथ जो घर बार छोड़कर जागनी के कार्य के लिए न्यौछावर हो चुके थे, उन सबने मिलकर एक बाग में बैठकर विचार किया कि किस तरह औरंगजेब तक ईमाम मेंहदी और कयामत के आने की सूचना पहुंचाई जाए ।

एक बात दिल में, लेओ तुम्हारी बीतक ।
श्री देवचन्द्र जी तुम पर, भेज दिया है हक ॥७॥

इस समय श्री जी के दिल में पैगाम देने की जो कशमकश लगी हुई थी, उस विचार से उन्होंने सुन्दरसाथ से कहा कि आज तक की सब बातों को देखकर आप सबको यह तो निश्चय हो ही गया होगा कि उन श्री राजजी महाराज की मेहर हम पर है, जिन्होंने श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्र जी) को तुम्हारा हादी बनाकर तुम्हारे लिए भेज दिया ।

और महम्मद साहिब आये, लेकर हक कलाम ।
सो ल्याये तुम्हारे वास्ते, कोई और न लेवे नाम ॥८॥

इस ब्रह्माण्ड में हमारे आने से पहले ही महंमद साहब के हाथ परमधाम के सब निशान तथा सब बातें तुम्हारे लिए लिख कर भिजवा दी । जिसके भेद तुम्हारे सिवाय अन्य कोई भी न तो खोल सकेगा और न उनके फुरमान को अपने सिर पर ले सकेगा ।

ए कलाम तुम बिना, और न काहू खुलत ।
ए मेहर कादर की, हुई तुमको इत ॥९॥

कुरान के अन्दर लिखी हुई सारी हकीकत को तुम्हारे सिवाय और कोई भी नहीं खोल सकेगा । कुरान को भेजने की मेहर श्री राजजी महाराज ने तुम्हारे वास्ते ही की है, जो इस दुनियां में तुम्हारे ऊपर हुई है।

Nijanand App

पैगाम को पहुंचावते, ए क्या करे तुम ।
जो कदी भेष बदले, तो डर नाहीं हम ॥१०॥

आखरूल जमां इमाम मेंहदी के आने के इस पैगाम को पहुंचाने में औरंगजेब तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा । यदि हम भेष बदल कर भी उसके दरबार में पहुंच जाय तो हमें किसी भी प्रकार से डरना नहीं चाहिए ।

जो कदी मार डारहीं, तो हमें मरनें का नहीं डर ।
हम जागें अपने धाम में, हमको नहीं फिकर ॥११॥

यदि श्री राजजी महाराज के हुकम को पूरा करने में औरंगजेब मार भी डालेगा तो हमें मरने का डर नहीं होना चाहिए क्योंकि इस तन को छोड़ने के बाद हम परमधाम में अपनी परआतम में जाग जाएंगे। इसलिए हमें किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए ।

ए बात सब दृढ़ करो, दिल के बीच विचार ।
जैसा जिने उकले, सो तैसा कहो करार ॥१२॥

संदेशा पहुंचाने के लिए हमें मरना भी स्वीकार है । इस बात को सब अपने-अपने दिल में विचार कर दृढ़ करो । यदि किसी के दिल में कोई संशय हो तो वह उस पर विचार करके प्रगट करे और अपने मन की दृढ़ता के अनुसार ही निश्चय करे ।

कोई कहेगा हमको, पूछी नही मसलत ।
तिस वास्ते मैं कहत हों, तुम जवाब करो इत ॥१३॥

बाद में कोई भी ये न कहे कि मुझसे पूछा नहीं गया था या सलाह नहीं ली गई थी । इसलिए मैं आप सबसे पूछ रहा हूं कि आप लोग अपने-अपने दिल की बात कहिए ।

ए तो राज के हुकमें, बैठे हैं आपन ।
ए तो निश्चे एहज है, हक बुरा न करे मोमिन ॥१४॥

श्री राज जी महाराज के हुकम से ही आज हम सब मिलकर विचार विमर्श कर रहे हैं । इस बात को निश्चित रूप से समझ लीजिए कि श्री राज जी महाराज अपने मोमिनों का कभी भी बुरा नहीं कर सकते।

दूसरे अपना अंकूर, ए जो है सकुमार से ।
सो जोरा क्यों ए न करे, थे एकठे वतन में ॥१५॥

औरंगजेब के अंदर परमधाम की साकुमार की आतम है । वह भी हमारे साथ परमधाम में श्री राजजी महाराज के सामने इकट्ठी बैठी है । इस सन्देश को सुनकर वह भी माया को छोड़ कर अपनी आत्मा को जगाने के लिए कोशिश अवश्य करेगा ।

Nijanand App

तिस वास्ते पैगाम पहुंचावना, एही किया परियान ।
सबों बात आपस में, एही लिया दिल मान ॥१६॥

औरंगजेब के पास संदेश पहुंचाना ही है, इस बात का दृढ़ निश्चय ले लिया गया । तब सब सुन्दरसाथ ने सर्वसम्मति के साथ इसको स्वीकार किया तथा वैसा ही करने का निश्चय कर लिया ।

महामत कहें ए मोमिनों, ए बीतक कही हम तुम ।
आगे जो मजकूर हुआ, सो ऐ बतावें हम ॥१७॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! यह बैठक हमने और आपने की थी, जिस में हर कीमत पर सन्देश देने का निश्चय किया गया । फिर इसके बाद क्या हुआ, बताता हूं ।

(प्रकरण ४१, चौपाई २०४८)

यों करते संझा समे, उठ आये अपने घर ।
फेर तहाँ रात को मिलके, बैठे मेहेजद पगथी पर ॥१॥

इस प्रकार बाग में विचार विमर्श करने के बाद उठ कर अपने उसी स्थान चांदनी चौक में आ गये। दिल्ली के कुछ सुन्दरसाथ अपने घर चले गए । श्री जी के साथ जो सुन्दरसाथ थे, वे जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर सनंध की वाणी गाने लगे ।

तहाँ जाए के सनंधे, गावत हैं कलाम ।
जोस भरे न देखहीं, दुस्मन खलक जो आम ॥२॥

वहां जाकर खूब जोश भरी आवाज में सनन्धों को गाने लगे तथा जोश में यह भी नहीं देखा कि यह मुसलमान लोग हमारे दुश्मन हैं ।

नित ही उत जाए के, गावत हैं बानी ।
सक दिल में न आवहीं, करें सब अपनी मानी ॥३॥

हर रोज वहां जाकर वे सनंध की वाणी गाने लगे । वाणी गाते समय वे किसी भी प्रकार का सन्देह अपने दिल में नहीं लाते थे । वे अपने मनमाने ढंग से वाणी गाते थे ।

जोस धनी सिर ऊपर, नजर नही संसार ।
निसंक चरचा करत हैं, परवाह नहीं लगार ॥४॥

धाम धनी का जोश इनके सिर पर था, इसलिए संसार की इन्हें कुछ परवाह ही नहीं थी । वे बेधड़क होकर चर्चा करते थे तथा मरने का भी उनके दिल में कोई डर नहीं था ।

Nijanand App

नन्दलाल घड़यालची, ल्याया कबीले समेत ईमान ।
खिजमत में ठाढ़ा रहे, रहती थी पहिचान ॥५॥

वहां नन्दलाल घड़ियालची ने जब यह वाणी सुनी तो दूसरे ही दिन अपने परिवार सहित श्री जी के चरणों में आया । तारतम लेकर वह सेवा में हाजिर रहता था क्योंकि उसे श्री जी के स्वरूप कीं पहिचान हो चुकी थी ।

और राजा राम जो, और बेटा सिवराम ।
दरसन को आवें नित, करें चरचा में आराम ॥६॥

नन्दलाल जी के भाई राजा राम भी अपने बेटे शिवराम के साथ चर्चा सुन कर ईमान ले आये और तारतम लेकर हर रोज चर्चा सुनने आने लगे ।

मिल भाइयों मसलत करी, रूक्का लिख सुनावें कान ।
घड़यालची ले जायेंगे, चोहोड़े दरवाजे गुसलखान ॥७॥

तब इन दोनों भाइयों ने मिलकर विचार किया कि नन्दलाल, यह रूक्का तुम रात को गुसलखाने के दरवाजे पर ले जाकर यदि चिपका दोगे तो बात औरंगजेब तक पहुंच जायेगी । यह विचार करके नन्दलाल घड़यालची ने श्री जी से अर्जी की कि आप रूक्का लिख कर दीजिए, उसे मैं रात को गुसलखाने पर चिपका दूंगा और बात औरंगजेब तक पहुंच जायेगी ।

तिन रूक्के में लिखा, जो कोई मुसलमान ।
तिनको खबर करत हों, तुम ल्याइयो ईमान ॥८॥

श्री जी ने रूक्का लिखकर दिया, जिसमें लिखा था कि जो कोई भी मुसलमान है, उसे हम सावचेत करते हैं कि इस रूक्के को सुनकर ईमान लाना ।

रूह अल्ला मिसल गाजियों, आये अरस से उतर ।
रसूल इनके सामिल, आये अपने वायदे पर ॥९॥

रूह अल्लाह अपनी उम्मत के साथ अर्श से उतर आए हैं और महंमद साहब भी अपने वायदे के अनुसार इनके साथ हैं ।

और असराफील आइया, जोस जबराईल आये संग ।
सो उतरे अरस अजीम से, खुद खसम के अंग ॥१०॥

असराफील और जबराईल, जो अल्लाह तआला के ही दो फरिश्ते हैं, इनके साथ अर्श अजीम से उतर कर आए हैं ।

Nijanand App

सुन सावचेत होइयो, जिन करो गफलत ।
जो कौल तुम सों किया था, सो आया फरदा रोज कयामत ॥११॥

ऐ मुसलमानों ! तुम इस रूक्के को सुनकर सावचेत हो जाना । किसी भी प्रकार की लापरवाही न करना । जो मुहम्मद साहब ने कुरान के अन्दर तुमसे कौल किया था कि अल्लाह तआला फरदा रोज को आएंगे और कयामत को जाहिर करेंगे, वह ग्यारहवीं सदी का समय आ गया है और खुद खुदा आखरूल जमां ईमाम मेंहदी के रूप में जाहिर हो चुके हैं ।

बिन सुने इन रूक्के को, जो बैठे इन दरबार ।
तिनको लानत खुदाए की, पहुंचे न परवरदिगार ॥१२॥

इस रूक्के को सुने बिना जो आज नमाज पढ़ने के लिए मस्जिद में जाएगा, उसको खुदा की लानत होगी और वह कभी भी अर्शे अजीम नहीं पहुंचेगा ।

हम अपने सिर का, उतारत हैं फरज ।
सो हमको ढूंढ लीजियो, जाको होए गरज ॥१३॥

इस रूक्के को चिपकाकर हम अपने सिर पर जो फर्ज था, उसको उतारते हैं । इसके बारे में जिसको अधिक जानकारी की इच्छा हो, वो मुझे दिल्ली में ढूंढ लेना ।

एह रूक्का लिख के, दिया हाथ नन्द लाल ।
गोंद लगाए रात को चोहोड़ियों, होए के दिल खुसाल ॥१४॥

ऐसा रूक्का लिखकर नन्दलाल घड़ियालची को दे दिया कि रात को बड़ी प्रसन्नता के साथ जामा मस्जिद के गुसलखाने के दरवाजे पर चिपका देना ।

तब घड़यालची ने, सिर चढ़ाया हुकम ।
रात को रूक्का चोहोड़िया, कछु न खाया गम ॥१५॥

तब घड़ियालची ने रूक्का लेकर श्री जी के हुकम के अनुसार रात को गुसलखाने के दरवाजे पर निःसंकोच होकर रूक्के को चिपका दिया ।

जब हो गई फजर, हुआ रूक्का जाहिर ।
रूक्का पढ़ के पैठहीं, जो आवते थे बाहिर ॥१६॥

जब प्रातः हुई और सभी नमाज पढ़ने आये तो रूक्का जाहिर हो गया । जो लोग बाहर से आते थे, रूक्का पढ़ कर ही अन्दर बैठते थे ।

Nijanand App

यों करते पढ़ते पढ़ते, दिन हुआ पहर एक ।
बांचत बांचत रूक्के को, कै पढ़ पढ़ गये अनेक ॥१७॥

इस प्रकार रूक्के को पढ़ते-पढ़ते जब एक पहर दिन हो गया तो अनेकों लोगों ने उस रूक्के को आकर पढ़ लिया ।

सोर भया दरबार में, भई खबर सुलतान ।
मंगाए लिया रूक्के को, तब भई पहिचान ॥१८॥

जब औरंगजेब का दरबार खुला तथा दरबारी लोग आए तब दरबार में भी रूक्के का शोर होने लगा। औरंगजेब तक भी यह बात पहुंची । उसने रूक्के को मंगाकर पढ़ा तो उसे हकीकत का पता चल गया।

खिजमत सेख सलेमान की, रूक्का पहुंचावत जब ।
गुस्सा किया सुलतान ने, सलेमान पर तब ॥१९॥

तब औरंगजेब ने उस रूक्के को पढ़कर शेख सुलेमान, जो दरबारी था और सबके प्रार्थना पत्र लेकर बादशाह तक पहुंचाता था, पर बहुत रोष प्रकट किया ।

क्यों ए रूक्का आइया, तें न करी खबर ।
इन रूक्के से मालूम भई, ए फरियाद तुझ ऊपर ॥२०॥

और पूछा कि यह रूक्का इस प्रकार क्यों चिपकाया गया । तुमने मुझे खबर क्यों नही दी । इस रूक्के से यह प्रत्यक्ष जाहिर है कि यह सब तुम्हारा ही गुनाह है ।

पहिले तेरे घर में, भटक फिरे हैं जब ।
तें कानों जब न सुनी, उन रूक्का चोहोड़ा तब ॥२१॥

पहले वे अवश्य तेरे पास भटकते रहे हैं । जब तुमने उनकी फरियाद नहीं सुनी तो उन्होंने लाचार हो कर इस तरह रूक्का चिपकाया है ।

तोकों मैं जो रख्या था, इसी काम ऊपर ।
जिन इतमाम को करे, सबकी दे खबर ॥२२॥

तब औरंगजेब बादशाह ने कहा कि मैंने तुमको इसी काम की नौकरी दी थी कि जो कोई भी फरियादी मेरे दरबार में आये तो उसकी खबर मुझे देना और किसी भी प्रकार की लापरवाही न करना ।

दूर करों खिजमत से, है नही कामिल ।
दोस दे मन सों काढ़िया, इन में नही अकल ॥२३॥

अपने दीवान को बुलाकर उसने हुकम दिया कि इसे नौकरी से हटा दो । यह इस योग्य नही है । उसको दोषी ठहरा कर मन से हटा दिया कि यह बिल्कुल बुद्धिहीन व्यक्ति है ।

Nijanand App

एह खिजमत इन से, तबहीं लई छुड़ाए ।
बेटा अब्दुल्ला सेख निजाम का, दई खिजमत ताए ॥२४॥

शेख सुलेमान को उस नौकरी से तुरन्त निकाल दिया तथा शेख निजाम के बेटे अब्दुल्ला को वह नौकरी दे दी ।

ढंढोरा ए फिराइया, होय फरियाद जो कोए ।
मैं जाऊं जुम्मे निमाज को, आये हाजिर होवे सोए ॥२५॥

तब दिल्ली नगर में यह ढ़िंढोरा फिरवा दिया कि जो कोई भी फरियादी हो तो जब मैं ईदगाह में जुम्मे की नमाज पढ़ने जाऊंगा तो वह उस समय मुझसे मिल ले ।

जब निकला जुमे निमाज को, खड़ा अब्दुल्ला आए ।
रूक्के जो फरियाद के, सब के लेता जाए ॥२६॥

जब बादशाह जुम्मे की नमाज पढ़ने के लिए गया तो अब्दुल्ला भी वहां पर खड़ा हुआ था । जो फरियाद के रूक्के देने वाले थे, वह उनके रूक्के लेता जा रहा था ।

आप खड़ा देखत, भये फरियादु अनेक ।
तामें लाल निरमलदास, ले गये अपना रूक्का एक ॥२७॥

खुद बादशाह खड़ा देख रहा था कि अनेकों लोग फरियादी बन कर आये हैं । उनमें श्री लालदास तथा निर्मल दास जी भी अपना एक रूक्का लेकर गये थे ।

रूक्का लेते बखत, अपना लिया इन ।
पढ़ रूक्का फाड़ डारिया, ऐ ना सुनों कानन ॥२८॥

जब वह सबके रूक्के ले रहा था तो उसने अपना भी रूक्का लिया । जैसे ही उसने रूक्का लिया तथा पढ़ा तो उसे तुरन्त फाड़ दिया ।

एह रूक्का फार के, ले डारा बीच जेब ।
एह तो बात मोमिन की, करनी है मोहे गैब ॥२९॥

रूक्का फाड़ कर उसने अपनी जेब में डाल लिया कि यह तो मोमिनों की वही बात है, जो गुसलखाने पर चिपकाई गई थी । इसको मुझे अवश्य छिपा देना है ।

Nijanand App

बहुत पुकारे मोमिन, क्योंए न सुने कान ।
एह हमारे वास्ते, खड़ा है सुलतान ॥३०॥

तब श्री लालदास जी और निर्मल दास जी ने चिल्ला-चिल्ला कर कहा कि बादशाह हमारे ही रूक्के के वास्ते खड़ा है पर अब्दुल्ला ने मोमिनों की पुकार को सुना ही नही ।

रूक्का चोहोड़न वाले हम हैं, ऊपर गुसलखान ।
गुस्सा हम वास्ते किया, ऊपर सलेमान ॥३१॥

तब मोमिनों ने कहा कि गुसलखाने पर रूक्का चिपकाने वाले हम लोग ही हैं और हमारे कारण से ही सुलेमान पर गुस्सा करके उसे नौकरी से निकाल दिया है ।

क्यों तुम ऐसा करत हो, डरते नही खुदाए ।
दिल मोहोर आँख ऊपर, क्यों अकल आवे ताए ॥३२॥

तुम हमारे रूक्के को फाड़ने का जुल्म क्यों कर रहे हो ? खुदा के खौफ से भी डरो । तुम्हारे जैसे लोगों के लिए, जो खुदा की तरफ से अन्धे हैं, कुरान में लिखा है कि मन और आंखों पर ताला पड़ा है । सत्य बात को समझने की बुद्धि तुम्हें कैसे प्राप्त हो सकती है ?

एक दोए तीर लगे, चले घोड़े पीछे घसेट ।
तब विचार किया मोमिनों, ए बात न सुने नेठ ॥३३॥

इतने में बादशाह ने घोड़े को एड़ी लगाई और घोड़ा भागने लगा । मोमिन दो-तीन तीर (फर्लांग) की दूरी तक दौड़ते हुए पीछे गए परन्तु बादशाह निकल गया । तब इन्होंने विचार किया कि बादशाह तक पैगाम निश्चय ही नही पहुंच सकता है ।

एह खबर श्री राज को, लिख के भेजी उत ।
हम पैगाम पहुंचावनें, कमी करी ना तित ॥३४॥

तब उन्होंने श्री जी को चिट्ठी लिखकर भेजी कि हमने पैगाम पहुंचाने में किसी भी तरह की कमी नही रखी ।

पर हम इत क्या करें, पोहोरा बड़ा दज्जाल ।
बात हमारी ना सुनें, सब परे बस दज्जाल के हाल ॥३५॥

हे श्री जी ! अब हम यहां क्या करें । दज्जाल का बहुत बोलबाला है जो इन लोगों के दिलों पर बैठा है । हमारे बहुत पुकार करने पर भी अब्दुल्ला ने एक नहीं सुनी । उनको अपनी शरीयत और बादशाहत का नशा है ।

Nijanand App

जिन भांत हम गए, सब लिख भेजी बीतक ।
पर हम इनको न छोड़हीं, तुम सिर पर खड़े हो हक ॥३६॥

श्री लालदास जी कहते हैं कि हे धाम के धनी ! जिस तरह से हम रूक्का देने के लिए अब्दुल्ला के पास गए थे और जो कुछ वहां हुआ उसे लिखकर आपके पास भेज रहे हैं परन्तु जब आप साक्षात् धाम के धनी हमारे सिर पर खड़े हैं और पल-पल हमारे ऊपर मेहर बरसा रहे हैं तो हम आपका संदेशा बादशाह तक पहुंचाकर ही दम लेंगे ।

एक लड़ाई हमारी, अब देखियो श्री राज ।
हुकम तुम्हारे से करें, पैगाम का हम काज ॥३७॥

हे धाम के धनी ! अब एक लड़ाई इस कार्य के लिए हमारी भी देखिये । आपके हुकम के द्वारा पैगाम पहुंचाने का काम हम करके ही छोड़ेंगे ।

अब हम लड़ने जात हैं, तुम रहियो हुसियार ।
तुम सिर पर हमारे खड़े, समरथ परवरदिगार ॥३८॥

हे धाम के धनी ! आप अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखना । बादशाह को संदेश देने के लिए हम दृढ़ता के साथ अर्पित हो चुके हैं । आप पूर्ण ब्रह्म, सब विध समर्थ, धाम के धनी हमारे सिर पर खड़े हैं ।

ए क्या करे हमको, हम ग्रहे तुम्हारे कदम ।
तो इनको हम मारत हैं, कोई हटें न पीछे दम ॥३९॥

जब हमने आपके ही चरणों का सहारा ले रखा है तो यह हमारा क्या कर सकते हैं । हम इस कार्य में अवश्य ही सफलता प्राप्त कर के आयेंगे और इस कार्य से अब कोई भी पीछे नही हटेगा ।

एह पाती लिखके, दई भाई कान जी के साथ ।
कान जी जाए के पहुंचिया, दई पाती हाथ ॥४०॥

इस प्रकार की चिट्ठी लिखकर कान्ह जी को देकर श्री जी के पास भेजा । कान्ह जी भाई उस पत्र को लेकर श्री जी के चरणों में आए और उन्होंने वह पत्र श्री जी को दे दिया ।

श्री राज पाती लिख के, भेजा तुरत जवाब ।
तुम आकले न होइयो, मैं आवत हों सिताब ॥४१॥

तब श्री जी ने उस पत्र को पढ़ कर तुरन्त ही जवाब लिख कर भेजा कि तुम जल्दबाजी न करो । मैं तुरन्त आपके पास पहुंच रहा हूं ।

Nijanand App

मोसों मिलाप करके, तुम कीजो एह काम ।
फेर बैठ मसलत करें, एक जागा इन ठाम ॥४२॥

मुझसे मिलने पर ही यह काम करना । मेरे आने पर सब सुन्दरसाथ मिल कर एक जगह बैठकर विचार विमर्श करेंगे ।

पाती पहुंची आए के, मिल बांची सब साथ ।
राह देखें श्री राज की, यहाँ लेनी दज्जाल सों बाथ ॥४३॥

श्री जी की पाती सुन्दरसाथ को मिली । सभी ने उसे पढ़ा और श्री जी के आने की राह देखने लगे क्योंकि दज्जाल की शक्तियों से उन्हें लोहा लेना था अर्थात् मुकाबला करना था ।

यों करते दूसरे दिन, आए पहुंचे श्री राज ।
चांदनी चौक की हवेली, छत्री के घर इन काज ॥४४॥

इस प्रकार दूसरे दिन प्रातः ही धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी आ पहुंचे । चांदनी चौक में एक क्षत्रिय के घर सभी इकट्ठे हुए ।

रहत लालबाई इनमें, तहां आए कियो मिलाप ।
साथ बैठ मसलत करी, तब जवाब किए आप ॥४५॥

श्री लालबाई जी यहां रहती थी । उन्होंने श्री जी का दर्शन किया । सब सुन्दरसाथ के साथ मिल कर विचार विमर्श किया गया । श्री जी ने उनसे पूछा कि आप लोग यह काम किस तरह से करना चाहते हैं, मुझे इसका उत्तर दीजिए ।

अब तुम्हें क्या करना, पहुंचावने पैगाम ।
साथियों जवाब दिया जोस में, हम टूक टूक होवें इन काम ॥४६॥

बादशाह तक पैगाम पहुंचाने के लिए आपने कौनसी योजना बनाई है ? तब सुन्दरसाथ ने जोश में उत्तर दिया कि हम टुकड़े-टुकड़े तो हो जायेंगे लेकिन पैगाम अवश्य देंगें ।

कोई बात की फिकर, हमारे मन में नाहें ।
जो डरे इन बात से, एक तरफ हो जाए ॥४७॥

भले ही हम मर क्यों न जायें लेकिन हमें किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं है । जो मरने से डरता हो, वह अभी से एक तरफ हो जाये ।

Nijanand App

हमको एक हुकम, तुम्हारा दरकार ।
और बात न जानहीं, बिना तुम परवरदिगार ॥४८॥

हमें केवल आपके हुक्म का ही इन्तजार है । हमें और कुछ भी पता नही है । हम केवल इतना ही जानते हैं कि आप हमारे धाम के धनी, पूर्ण ब्रह्म, सच्चिदानन्द हैं ।

हम तो अपने वजूद को करें, कुरबान ऊपर इसलाम ।
हमको और न सूझहीं, बिना करे एह काम ॥४९॥

हम तो श्री निजानन्द सम्प्रदाय, दीने इसलाम के कार्य को पूरा करने के लिए मर मिटने को तैयार खड़े हैं । अब इस कार्य को करके ही छोड़ेंगे भले ही हम मर क्यों न जायें ।

जोस इनों का देखके, श्री राज भए खुसाल ।
तब दिलासा दई बड़ी, देख मोमिनों हाल ॥५०॥

उनके दृढ़ता भरे जोश और समर्पित होने की भावना को देख कर श्री जी बहुत प्रसन्न हुए । तब श्री जी ने बहुत तसल्ली दी कि आप किसी प्रकार की चिन्ता मत करो ।

इनों को देखे आसिक, ऊपर दीन इसलाम ।
एह बकसीस हक की, नाहीं और का काम ॥५१॥

श्री जी ने श्री निजानन्द सम्प्रदाय के ऊपर मर मिटने वाले इन सच्चे आशिकों को देखा और कहा कि यह श्री राजजी महाराज की मेहर (बख्शीश) है कि तुम यह कार्य कर रहे हो । इस कार्य को करने की शक्ति और किसी के पास नही है ।

बातें करें जोस में, एक पे एक सरस ।
हुए मगन दीन में, करते हैं हंस हंस ॥५२॥

उमंग और उत्साह में भरे वे सुन्दरसाथ एक से एक बढ़ कर ईमान भरी बातें कर रहे थे । ये सुन्दरसाथ अपने धर्म पर बलिदान होने के लिये इतने मग्न थे कि मरने के लिए भी आपस में हंस-हंस कर बातें कर रहे थे ।

रसोई कर श्री राज को, अरूगाया इत ।
स्याम बाई राम राए, कदमों लागे इन बखत ॥५३॥

इस काम के लिये अर्पित हुए सुन्दरसाथ ने अपने हाथों से श्री जी को थाल बना कर अरूगाया । श्याम बाई और राम राय ने आकर श्री जी के चरणों में प्रणाम किया ।

Nijanand App

कोई ल्यावत मिठाई को, कोई और और साज ।
सब खुसाल होए के, अरूगावत हैं श्री राज ॥५४॥

आप श्री जी थाल आरोग रहे थे तो कोई सुन्दरसाथ मिठाई लाता था तो कोई कुछ लाता था । सब प्रेम से आरोगा रहे थे ।

इत खुसाल होए के, रजा दई श्री राज ।
जाए पधारो एकान्त, अब देखो हमारा काज ॥५५॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी महाराज मोमिनों पर बहुत प्रसन्न हुए तथा मोमिनों को जाने के लिए आज्ञा दी । तब श्री लालदास जी ने कहा कि हे श्री जी ! आप कहीं एकान्त में जाकर पधारिए । अब हम आपके ही आशीर्वाद से यह काम करेंगे ।

महामत कहें ऐ मोमिनों, सुनियों एह बीतक ।
अब आगे तुमको कहों, जो हुआ हुकम हक ॥५६॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! इस बीतक को अच्छी तरह से सुनिए। अब श्री राज जी महाराज के हुकम से जो कुछ हुआ, उसे आगे कहता हूं ।

(प्रकरण ४२, चौपाई २१०४)

साथ सबे मिल बैठ के, लगे करने परियान ।
अब हमको क्या करना, ए क्यों ल्यावे ईमान ॥१॥

अब सब सुन्दरसाथ मिलकर विचार विमर्श करने लगे कि हमें क्या करना चाहिए जिससे औरंगजेब को आखरूल जमां ईमाम मेंहदी स्वामी जी पर ईमान आ जाए ।

बिना आपा दिए, और ना लिया जाए ।
एही दिल में विचारिया, और नही उपाए ॥२॥

अपने आपको कुर्बान किए बिना अब और कोई रास्ता नही है । सबने विचार करके अपने दिल में यही निर्णय लिया कि इसका और कोई उपाय नही है ।

काएरों के दिल में, बड़ा जो पैठा डर ।
दिल में मुनाफकी थी, बनाए बातें करें ऊपर ॥३॥

इनमें से जो बुजदिल (कायर) सुन्दरसाथ थे, उनको मरने का बहुत डर लगा । उनके दिल में मुनकरी आ गई, इसलिए ऊपर से बनावटी बातें बनाकर अपने को ईमान वाला दिखाते थे ।

Nijanand App